मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख
सलंग अंक ९९ जुलाई-२०१५

विश्वका सर्व प्रथम
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर
अमदावाद नये रुप रंग के साथ

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) अपने आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन के दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प्रासंगिक सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) शिकागो मंदिर में सत्संग कराते हुए शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा.स्वा. भक्ति स्वामी, शा. विश्वविहारी स्वामी तथा शा. यज्ञप्रकाशदास स्वामी।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : ९९

जुलाई-२०१५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	जेतलपुर की गंगा मां की गाथा	०६
०४.	श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से अमृतवचन	०९
०५.	"आपको सत्संग का कवि बनाते है"	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०७.	सत्संग बालवाटिका	१७
०८.	भक्ति सुधा	१९
०९.	सत्संग समाचार	२२

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

अपने इष्टदेव सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण अति दयालु है। वर्षाऋतु बैठते ही चारो तरफ बरसात हो गया। अमरेली जिला में अतिवृष्टि होने के कारण काफी नुक्शान हुआ। कितने लोग पानी में डूब गये। पशु-पक्षी तथा जंगल के प्राणी सिंहादिजानवर मर गये। माल-सामान का तथा खेत में फसल का काफी नुकशान हुआ है। जब कि दूसरे विस्तारो में धान रोपने लायक बरसात हुआ है। दुःख तथा आनंद दोनो हुआ है। अभी पुरुषोत्तम मास चल रहा है। अधिक मास का मतलब अधिक भजन भक्ति करने के मास। इस महीने में जितना अधिक हो सके भजन भक्ति करना चाहिये। भजन करते करते वासना रहित होना है।

किसी को ऐसा संशय हो कि ''अत्यन्तनिर्वासनिक नहीं होना है और जैसे है वैसा ही मरजाने से क्या हाल होगा ? ऐसा विचार भगवान के भक्त को नहीं करना चाहिए। उसे ऐसा समझना चाहिए कि - मरेगी तो शरीर मरेगी, लेकिन हम तो आत्मा है, अमर हैं हम मरेंगे नहीं। ऐसा समझकर हृदय में हिंमत रखकर सभी वासना का त्याग कर परमात्मा में अचल मति करें। इस तरह करने पर भी थोडी वासना रह भी जाय तो जिस तरह मोक्ष धर्म में नरक कहे हैं, उसी नरक की प्राप्ति होगी। ते नरक वी विगति जे गवान नो भक्त होय तेने कांई जगतनी वासना रहे तेने इन्द्रादिक देवता जे लोक तेनी प्राप्ति थाय ते ते लोक ने विषे जई ने अप्सराओ तथा विमान तथा मणिमय महोल आदिक जे वैभव ते सर्वे परमेश्वर ना धामनी आगड नरक जेवा छे तेने भोगवे छे पण विमुख जीवनी पेटे यमपुरीमां जाय नहिं अने चोराशीमां पणजाय नहिं। माटे जे सवासनिक भगवानना भक्त हशो तो पण घणुं थसो तो देवता थवुं पडशे ने देवता माथी पडशों ते मनुष्य थशो ने मनुष्य थईने बड़ी पाछी भगवाननी भक्ति करीने ने निर्वासनिक थई ने अन्त्ये भगवानना धामने पामशो। पण विमुख जीवनी पेठे नरक चोराशी ने नहि भोगवे, एवुं जाणीने भगवाननो भक्त होय तेन वासनानुं बल देखीने हिंमत हारवी नहिं ने आनंद मां भगवाननुं भजन कर्या करवुं अने वासना टाल्याना उपायमां रहेवुं ; भगवानने भगवानना संतना वचनमां दृढ विश्वास राखवो।

(वच. सारंगपुर का ४ थां)

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(जून-२०१४)

१	सोजा गाँव में पदार्पण।
३ से १४	पर्थ ओस्ट्रेलिया सत्संग प्रचार के लिये तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका) के पाटोत्सव प्रसंग पर एवं सभा/प्रसंग पर पदार्पण।
२६	श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलीया कथा प्रसंग पर पदार्पण।
२८	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अधिक पुरुषोत्तम मास के निमित्त समूह महापूजा आपनी शुभ उपस्थिति में सम्पन्न किये।
	श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली समूह महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण

जेतलपुर की गंगामा की गाथा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

जूनागढ के नागर नरसिंह महेता की पुत्री कुंवरबाई का उना में विवाह किया गया था । उनकी बेटी शर्मिष्ठा का विवाह वडनगर में किया गया था । भक्तराज नरसिंह महेता अन्तिम उम्र में पुत्री की पुत्री के घर आकर रहने लगे थे ।

शर्मिष्ठा को ताना-रीरी दो बेटियां थीं । जिन्हे नरसिंह महेता संगीत की शिक्षा दिये तथा कवितान सेन को मल्हार राग का ज्ञान करके दीपक राग की उष्णता को शान्त किये थे । उनको भीमनाम का एक पुत्र था । उनसे नव पुत्र हुये । (१) उनावा (२) ऊँझा (३) नारदीपुर (४) माणसा (५) कोठा (६) पेथापुर (७) महेतापुर (८) पलियड (९) वेडा ए सभी इन स्थानों में जाकर वसे थे । नव में से एक पुत्र श्यामजी महेता नारदीपुर में आकर वसे थे । उन्हे भूदर नाम का पुत्र पैदा हुआ । उनके घर में अनंतकोटि ब्रह्माडं के अधिपति जैसे ''मा'' कहकर बोलाने वाले ऐसे जेतलपुर की तथा संप्रदाय के इतिहास में उद्धव संप्रदाय की प्रणेता ऐसी सत्संग शिरोमणी ''गंगाबा'' का विक्रम संवत १८०७ जेठ शुक्ल सप्तमी के दिन माता कुंवरबा की कोख से प्रथम सन्तान के रुप में प्रादुर्भाव हुआ ।

भूदर महेता को तीन पुत्री तथा दो पुत्र थे ।

(गंगा मां) गंगाकुंवर, रणीयातकुंवर,

कशलीकुंवर पुत्री, तथा नानालाल, जोईताराम पुत्र हुये।

भुदर महेताने पुत्री गंगाकुंवर को नारदीपुर गाँव में वल्लभदासजी के पुत्र विश्वनाथन रावल के घर विवाह किया। रणीयात कुंवर पुत्री का विवाह उनावा में किया। कशलीकुंवरने स्वेच्छा से नागर अन्यजाति में विवाह महेसाणा दवे जाति में किया। उस समय इसका विवाह होने से उन्हे जाति से अलग कर दिया गया। जिन कुशली कुंवर के घर पर श्रीहरिने खीचडी की दातुन की थी। इसके अलांवा रणीयातकुंवर के यहाँ उनावा में श्रीहरि सात बार पदार्पण करके भोजन किये थे। पुत्र नानालाल करजीसण रहने चले गये तथा कडवा पटेल ४२ समाज की यजमानी करते। दूसरे पुत्र नारदीपुर में रहे। गंगा मां के माता पिता के विवाह समय ददरबार पिपलज ठाकोर साहेब स्वंय वेडा गाँव में गये हुये थे इसलिये पुत्री गंगा मां को भान्जी कह कर पुकारने लगे थे। नरादीपुर तथा वेडा का राज्य पिपलज के ठाकोर साहब का था। गंगा मां के पिताजी भुदरजी तथा बलदेवजी के नाम से भीजाने जाते थे। जो रामानंद स्वामी के सचिव के रुप में सेवा करते थे। पिपलज के ठाकोर साहेब के अन्तरंग सन्माननीय भूदरजी को रामानंद स्वामी के साथ विचरण करके उद्धव संप्रदाय का विसनगर सहित नागरों के नवगाँव में पापाडा ला था। उस सयम पांम पंथियो का बहुत प्रचार था। परंतु ठाकोर साहेब के सहयोग से उद्धव संप्रदाय के आश्रित बढने लगे।

एकबार गंगाबा के दादा श्यामजी महेता को स्वप्न आया कि नारदीपुर में खाखास के टेकरे केनीचे भगवान की मूर्ति मुगल शासन के समय से दबी पडी है। लक्ष्मणजी की मूर्ति में दाहिने गाल में काले तिलकी निशानी है। यह बात जमीन के मालिक रबारी को की तो उसने भी साक्षी के रुप में कहा कि हमारे गायें भी भींटे के ऊपर अनेकोबार सींग से जमीन खोदने का प्रयत्न की है।

पिपलज ठाकोर की मदद से भींटे को खोदा गया तो उसमें से बलरामजी, श्रीकृष्ण, राधाजी, रेवतीजी, पांच पांडव, कुंतीजी, अष्टपटरानी, बलीयादेव इत्यादि की मूर्ति निकली। इन मूर्तियों में से बलियादेव की मूर्ति को नारदीपुर के नायक लोग लांभा गाँव के तालाब के किनारे स्थापना करके मंदिर बनाया जो आज लांबा में बलीयादेवजी के रुप में प्रसिद्ध हैं। इसके अलांवा पांडव एवं कुंन्तीजी को एक नायक बहुचराजी के पास आसजोलगाँव में लाकर मंदिर बनावकर प्रतिष्ठित किया। नारदपुर के नायक समाज के लोग लांबा में यजमानी का पद स्वीकार कीया जिसमें वल्लभदास रावल यहाँ आकर रहने लगे। वे बड़े विद्वान थे जिससे लांभा-जेतलपुर-असलाली गाँव की यजमानी करते थे। बाद में जेतलपुर के ग्रामवासी उन्हें जेतलपुर में लाकर रखे जिससे वे वहाँ के निवासी हो गये। वल्लभदास को विश्वनाथ नामका एक पुत्र था। उसका विवाह नारदीपुर के भूदरजी महेता की पुत्री गंगाकुंवरबा के साथ हुआ, जिससे गंगाबा जेतलपुर आ गयी, रहने के लिये। वल्लभदास रावल को कई गाँवो की यजमानी थी। वे बड़े सात्विक एवं संयमी व्यक्ति थे। संतोषी होने से उन्हे सभी चाहते थे। परिणामतः सुखी थे। वे प्रायः यज्ञ करते रहते थे। नारदीपुर के रबारीवास के टीले से निकली मूर्तियों में से राधाकृष्ण की मूर्ति अपने घर में प्रतिष्ठित करके पूजा करते थे।

बलदेवजी रेवतीजी तथा लक्ष्मणजीकी मूर्तिओ को नारदीपुर में गंगामां के पिता भूदरजी महेता अपने घर में रखकर पूजा करते थे। जिसे श्रीहरि जेतलपुर में

आनंदानंद स्वामी से मंगवाकर जेतलपुर में मंदिर बनवाकर प्रतिष्ठित करवाये थे बालदेवजी रेवतीजी तथा लक्ष्मण जी की मूर्ति को हरिकृष्णनाम देकर प्रतिष्ठित करवाये थे । संवत १८८२ फाल्गुन कृष्ण-८ को यह प्राण प्रतिष्ठा हुई थी । एकवार स.गु. रामानंद स्वामी जेतलपुर में पधारे उस समय विश्वनाथ रावल की पत्नी गंगा बा उद्धव संप्रदाय की आश्रित हो गयीं । उन्हीं की आज्ञा से अन्नक्षेत्र प्रारंभ कीं । उन्होंने संकल्प ले लिया कि अतिथि को भोजन के बाद ही हम अन्न ग्रहण करेंगी ।

एकवार १८३७ संवत् चैत्र मास में वडनगर के नागरों के अधिष्ठाता हादकेश्वर जयंती के पर्व पर जेतलपुर से विश्वनाथ रावल वडनगर शिवपूजन करने के लिये रुके थे । वहाँ लूणेश्वर महादेव मंदिर की भीड में एक भयंकर घटना घटी जिसमें गंगामां के पति विश्वनाथ की ३२ वर्ष की उम्र में निधन हो गया ।

उस समय पीपलज के ठाकोर साहेबने विश्वनाथ के पार्थिव शरीर को जेतलपुर भेंजवा दिया ।

छोटी उम्र में विधवा होने के कारण गंगाबा अपने पति के साथ देव सरोवर के पश्चिम किनारे पर चिता लगाकर सती होना चाहती थी । चिता में बैठने ही जा रहीं थी कि साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण प्रगट होकर उनका हाथ पकड़कर बाहर निकाले और कहे कि अभी तुम्हारे हाथ से हमें बहुत सेवा लेनी है ।

गंगाबाने कहा कि हमें कोई पुत्र नहीं है तो जीने से क्या फायदा । श्रीकृष्णने कहा कि गंगा मैं तेरा पुत्र बनकर रहूँगा । तुम्हे मां कहकर पुकारुंगा । हमारे सभी आश्रित तुम्हें मां कहेगें । इस तरह परमात्मा का वचन सुनकर पतिका वियोग हट गया । इसके बाद पतिके पिता वल्लभदास का अनुकरण करते हुए भगवान कृष्ण कीसेवा करती रहती । एकवार रामानंद स्वामी के आशीर्वाद से राधाकृष्म की मूर्ति प्रत्यक्ष प्रसाद ग्रहण करती थी ।

उसी समय से पुत्र के रुप में प्रतिज्ञा करते-करते एकदिन नीलकंठवर्णी को घर आना पड़ा । भोजन के समय ''मां'' ऐसा वचन कहने मात्र से पति के अग्नि संस्कार के समय का वचन स्मरण होते ही स्तन में दूधआ गया । संप्रदाय में उत्तम कोटि की बहुत भक्त हुई लेकिन मां शब्द मात्र गंगाबा को कहे ।

गंगामा, रामानंद स्वामी, तथा श्रीहरि श्याममूर्ति-राधाकृष्णदेव तथा महाप्रतापी बलदेवजी रेवतीजी श्रीहरिकृष्ण महाराज की अनेकों बार पूजन-आरती किये हैं ।

संप्रदाय के सुप्रसिद्ध नारदीपुर के तोताभक्त मेवाड चित्तौड़गढ के रहनेवाले थे । गंगाबा उन्हें भाई कहती थी ।

गंगाबा का मायका भूदर महेता का घर नारदीपुर ''कियारी'' के पास आया हुआ है । जेतलपुर मंदिर के चौक में जहाँ पर छत्री है वहीं पर पुराना मकान था ।

मंदिर बनने के बाद मंदिर के पूर्व दरवाजा के सामने वाले घर में जीवनपर्यंत रहीं । वि.सं. १८९८ पौष शुक्ल-१५ को ९७ वर्ष की उम्र में अक्षरनिवासी हुआ था ।

जहाँ पर पति विश्वनाथ का अग्नि संस्कार किया गया था उसी स्थानपर देव सरोवर के किनारे महाराजश्री प्रसादी की फूलवाडी अक्षर महोल में अंतिम संस्कार किया गया था । ३० वर्ष की उम्र में विधवा हुई थी । जब देह त्याग दीं तब उनकी उम्र ९७ वर्ष की थी ।

गंगाबा के सासका नाम भवानी कुंवर बा था । उनका मायका लुणावाडा के पास मोटा सोनेला था ।

श्रीहरि के अपर स्वरुप के मुख से

अमृतवचनो

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

हर्षद कोलोनी मंदिर पंचम पाटोत्सव (बहनों का मंदिर) के सभा प्रसंग पर ता. १०-५-१५ : प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हम जब छोटे थे तब यहाँ आते थे उस समय बहुत थोडे हरिभक्त थे ।(जो भाईयों का मंदिर है वह ३० वर्ष पुराना है) हरिभक्तों के तप एवं भजन भक्ति से इस विस्तार में सत्संग की खूब अभिवृद्धि हुई है । इस विस्तार में जो भी मंदिर बने हैं उन सभी का यह मूल है ऐसा कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी । मंदिर के विषय में प.पू. महाराजश्रीने कहा कि, नूतन मंदिर बनाने के लिये लगभग हमारी हाँ ही होती है । इसका कारणयह कि संसार के लोग जगहजगह पर होटल तथा मोल बनाते हों तो हम शहर शहर में मंदिर बनायें इसमें बाधा क्या है ? महाराज कहते है कि हमें तो गाँव गाँव में, घर-घर में, व्यक्ति-व्यक्ति में मंदिर बनाना है । लोगो को ग्राहक खोजने जाना होता है, ग्राहक नहीं मिले तो मोल को गिरा देना पड़ता है । हमें तो ग्राहक खोजने की आवश्यकता हीं नहीं है । जिन्हे कल्याम की चाहना हो वह स्वयं सामने से चलकर आता है । मंदिर बनाने में कोई स्वार्थ या व्यापार नहीं है । वर्तमान टेक्नोलोजी में तो मंदिर बनाना बड़ा सरल भी है । संकल्प करते ही मंदिर तैयार हो जाय ऐसा है ।

मंदिर दो चार दिन तक न जाने पर कोई संत या भक्त पूंछें कि मंदिर क्यों नहीं आते तो उनका अवगुण नहीं लेना चाहिये बल्कि उनका उपकार अवश्य मानना चाहिये । जो किसी में अवगुण देखता है वह आधा विमुख ही है, ऐसा समझना चाहिये । कितने लोग तौ ऐसे हैं कि मंदिर में आते हैं अवश्य लेकिन भगवान की तरफ देखने की अपेक्षा अपने अगल बगल वालों को देखते हैं । यह भक्त इतनी माला कतरा है, वह भक्त तो माला ही नहीं करता । फलाना भक्त तो दंडवत ही नहीं करता इत्यादि उसके मनमें विचार चलता रहता है । ऐसा जो विचार करता है उसके लिये ऐसा मानना चाहिये कि बगल वाला पूर्वजन्म में माला या दंडवत करके आया होगा । जब कि हमें अभी टाइल्स घिसनी बाकी है । इसका मतलब यह कि दूसरे में गुण देखना तथा स्वंय में दोष देखना चाहिये । ऐसा करने से अपनी ऊर्ध्वगति होती है । दूसरों का ध्यान रखने में अपना ध्यान रहजाता है ।

सही तो यह है कि बडी सरलता से हमें भगवान मिल गये हैं । इसीलिये माहात्म्य रहता नहीं है । बाकी तो पूर्व में ऋषिलोग हजारो वर्ष तक भगवान से मिलने के लिये तप करते थे फिर भी किसी कारण से तपोभंग हुआ है और प्रभु की प्राप्ति नहीं हुई है । जो वस्तु सरलता से मिल जाती है उसकी कीमत नहीं होती जो परिश्रम से अर्जित करता है उसे उस वस्तु की कीमत होती है ।

आज तो पैसे, मोटर, बंगला, पद इत्यादि के पीछे मनुष्य की दौड़ बड़ती जा रही है । पैसे से व्यवस्था मिल सकती है । लेकिन सच्चा सुख एवं शांति नहीं मिल सकती है । सच्चासुख तथा शांति तो भगवान के चरणों में है । पैसे से शांति मिल जाती हो तो पैसेवाले को दो-दो ए.सी. में भी पूरी रात करवटें बदलनी पड़ती है । उसी

जगह पर आपके बाप-दादा खेत में अथक परिश्रम करके उसी खेत के वृक्ष की छाया में ढेले को सिरहाना बनाकर गहरी नीद में सो जाते थे। आज भी वे सो जाते हैं। पैसों से हमारा विरोधनहीं है, कारण यह कि किसी की गाडी़ पानी से नही चलती पेट्रोल से चलती है। लेकिन सबसे बड़ी वात संस्कार की है। यदि पैसो के साथ संस्कार होगा तो अपनी गाड़ी मंदिर की तरफ जायेगी, संस्कार होगा तो धन सन्मार्ग पर जायेगा। संस्कार के विना लोग अपना धन कहा लगाते हैं यह आप सभी जानते हैं। उन्हीं संस्कारो को बनाने के लिये मन्दिर केन्द्र स्थान पर हैं। इस लिये मंदिर, शास्त्र, सन्त का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिये।

पुराणों के आधार पर देखें तो कोई अधिक तप करने लगा तो इन्द्रासन डोला, इन्द्र को अपने आसन की चिन्ता होने लगी, अप्सरा को भेंजा और ऋषि का तप भंग किया। कईबार तो तलवार से एक दूसरे को काट डाला गया है। आज भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिलती है। कानून की पकड़ होने से किसी को तलवार से काटा नहीं जा रहा है। लेकिन मानसिक त्रास देकर परेशान किया जा रहा है। हमे जैसा मानते है वैसा ही बोलते हैं। हम माने नहीं और दूसरे को कहें तो उस पर कोई असर नहीं होगी। सभी को इसका ख्याल रखना चाहिये कि जन्म हुआ है तो मरण अवश्य होगा। स्मशान की दूरी का अवश्य ख्याल रखना चाहिए। गरीब हो या अमीर सभी को स्मशान में एक दिन जाना होता है। सभी के जन्म से मरण तक की गति उसके घर से स्मशान गृह तक ही होती है। जीवन के इतने कम दूरी वाले रुट में व्यक्ति कितने खेल खेलता है। कितना दौड़ता है, कितना इकट्ठा करता है, ईर्ष्या, अहंकार, झगड़ा इन सभी का कोई पार नहीं है। इसलिये सभी को विचार करना चाहिए कि हम किस लिये आये हैं ? क्या कर रहे हैं ? क्या करना चाहिए ? एक मात्र भगवान शास्वत है, सभी के हितकर्ता है। हम भी शास्वत नहीं है। इसलिये प्रीति करने लायक एकमात्र भगवान है, उन्ही की भक्ति करनी चाहिए। भगवान से दूर नहीं होना चाहिए, लेकिन हमारा स्वभाव है कि हम अपने भगवान को दूर कर देते हैं। आप सभी को उपदेश देने हम नहीं आये हैं कारण यह कि आप सभी लोग प्रत्येक प्रसंग में खूब सेवा किये हैं। कर रहे हैं, भगवान में प्रीति हो तभी सेवा होती है।

कुंदनपुर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर : यजमान के घर पर हम लोग पदार्पण किये थे। वहाँ पर २२ वर्ष पूर्व की एकपत्रिका देखी। २२ वर्ष के बाद आज पुनः यह यात्रा निकली है। २२ वर्ष में दोबार यात्रा निकले यहाँ तक तो ठीक है, परंतु कहीं कहीं तो १ वर्ष २२ वार शोभायात्रा निकलती है। इस समय सत्संग का व्याप बढता जा रहा है। एक ही साथ में कई जगहों पर उत्सव-पाटोत्सव का आयोजन होता है। कई वर्षो पूर्व हम कच्छ देश में १ वर्ष में दो-बार आते थे। आज ऐसा हो गया है कि महीने १-२ बार आना हो जाता है। दो से अधिक भी हो जाता है। अमदावाद से यहाँ आने में गाडी में पांच घन्टे लगे वहाँ पांच घन्टे गाड़ी मे बाद में २-३ घन्टे शोभायात्रा में बाद में सभा में २-३ घन्टे बैठना। प.पू. महाराजश्री सत्संगी मात्र को सुख देने के लिये बैठना। प.पू. महाराजश्री सत्संगी मात्र को सुख देने के लिये भावना पूर्ण करने के लिये, जीवात्माओं का कल्याण करने के लिये, निःस्वार्थ रात-दिन विचरण करते रहते हैं। इसलिये सत्संगी-साधु मात्र को शोभायात्रा को भूल जाना होगा यही विवके हैं।

आज की शोभायात्रा - शोभायात्रा नहीं है बल्कि जुलूस जैसा हो गया है। इससे ट्राफिक की समस्या भी होती है। गाँव में ट्राफिक की समस्या भले न हो लेकिन शहर में तो यह एक जटिल समस्या बनती जा रही है। सूरत शहर के कितने नवयुवकों ने शपथ लिया है कि हम विवाह प्रसंग पर जुलूस नहीं निकालेंगे। ऐसे सभी लोगों को धन्यवाद। शोभायात्रा में हम आपको पहचानते हैं, आप हमें पहचान ते है। इसके अलांवा पान की दुकान वाला हो या अन्य दुकान वाला हो उसे तो ऐसा लगता है, कि ये लोग तो अभी शोभायात्रा निकाले थे ? फिर वहीं

लोग है न ? महाराज हम सभी को विवेकपूर्वक काम करने की वुद्धि दी है । इसलिये शोभायत्रा मे जो समय जाता है वह समय कथा में दें तो विशेष फलदायी होगा ।

एक दूसरे को शांति से मिल भी सकते हैं । सद्‌गुणों को विशेष पोषण मिलेगा । अमदावाद देश में अगल-बगल में १००० गांव है वहाँ पर इसका संदेश भी स्वामिनारायण मासिक अंक के माध्यम से प्रेषित कर दिये हैं । यहाँ पर भी सभी मिलकर नियंत्रण ला देंगे तो आनंद होगा । एक साथ ब्रेक लगाना ठीक नहीं है धीरे-धीरे करेंगे तो ठीक रहेगा ।

प्रतिष्ठा उत्सव में जितना उत्साह रहता है उतना ही उत्साह मंदिर में महाराज का प्रतिदिन दर्शन में होना चाहिए । स्वामी (कथा वक्ताश्री) आप अग्रगण्य भक्तों द्वारा दर्शन के लिये आने वाले भक्तों की हाजिरी हो ऐसा कुछ आयोजन कीजिये । जिस हरिभक्त की अधिक हाजिरी होगी उसको हम हार पहनायेंगे ।

निवृत्ति के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री के वचनो को आशीर्वचनों को प्रकाशित करने में रुचिन होने पर भी प्रकाशित किया जाय क्यों कि उनके वचन प्रेरणात्मक होते हैं, अधिक नहीं तो पेरेग्राफ में भी प्रकाशित किया जा सकता है ।

प.पू. बडे महाराजश्री : अपना जवीन कितना क्षण भंगुर है उसके लिए एक कहावत है कि सोमवार को अपना जन्म ही, मंगलवार को पंचवर्तमान धारण करवाया जाय, बुधवार को पढने बैठे, गुरुवार को नौकरी मिले, शुक्रवार को वृद्ध हो जांय, शनिवार को बिमार हो जांय, रविवार को अपनी मृत्यु हो जाय । इसका मतलब कि स्वल्प समय में सत्संग-भक्ति करके मनुष्य जीवन को सार्थक बना लेना चाहिए ।

किसी के पास खूब धनसम्पत्ति हो और चिंतामणि भी हो, संयोगवश चोर आकर उसे चुरा ले जांय तो भी उसके लिये दुःखी होने की जरुरत नहीं है, कारण यह कि चिंतामणि होने से चुराया हुआ धन वापस आजायेगा यदि चिंतामणि चुरा जायेगी तो दुःखी होने का अवसर आयेगा । अपने पास जो भगवान हैं वे चिंतामणि के समान है श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में चिन्तामणि ही प्राप्ति है । उन से हमे कोई अलग न करे इसका सतत ध्यान रखना चाहिए । खूब जतन करके श्री नरनारायणदेव को ध्यान में रखेंगे तो अवश्य सब कुछ प्राप्त होगा - इसमें संदेह नहीं है ।

कालुपुर मंदिर द्वारा वचनामृत वुटका (२७३) अंग्रेजी में प्रकाशन

जैसे - जैसे सत्संग देश-विदेश में वृद्धि को प्राप्त हो रहा है उसी तरह भावी पीढी भी अंग्रेजी साहित्य को वांचना चाहती है । प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से सत्संग साहित्य प्रेमी एक हरिभक्तकी तरफ से वचनामृत अंग्रेजी गुटका (२७३) का अधिक अषाढ शुक्ल-११ एकादशी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथो से विमोचन किया गया था । विदेश के प्रत्येक मंदिरो में भेट के रुप में दिया जायेगा ।

(पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी)

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

आपको सत्संगना ऋषि बनाते है

(दलपत शृंखला-४)

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदावाद)

पिता डाह्यालाल प्रखर अग्निहोत्री थे । पुत्र को नूतन धर्म (श्री स्वामिनारायण धर्म) स्वीकारने से काफी खिन्न थे । गजब हो गया, मेरा निर्वंश हो गया । इस तरह आक्रोश करते हुए अग्नि होत्री के कुंड को खोद डाला, अग्नि को प्रगट करने के साधन को नष्ट करडाला । उसी समय अकेले घर का त्याग करके धोलका के पास बैठा गाँव के सप्रसंग घाट पर विजयानंद स्वामी से सन्यासी दीक्षा ले लिये । डाह्याभाई से अब वे माधवानंद स्वामी हो गये । इस के बाद संवत् १९०० के धनुर्मास की शुक्ल चतुर्दशी को माधवानंद स्वामी कैवल्यपद को प्राप्त हो गये ।

इधर पंचवर्तमान धारण करके अपने घर आये हुये दलपत राम पहले क्या किये ? तो दलपतारम अपनी आयुका एक मंत्र सीखे : कविता की अपेक्षा सद्धर्भ अधिक है । साहित्य की अपेक्षा संसार बड़ा है । कविता तथा साहित्य निश्चित ही भावना का विषय है लेकिन दोनो का चक्रवर्ति तो सद्धर्म है । कविता तथा साहित्य का नियामक तो सदाचरण एवं सदाचार है । पंचवर्तमान धारण करने से पूर्व दलपतरामने ''हीरादन्ती तथा कमललोचनी'' नामक दो विभत्स श्रृंगारी रचना की थी । स्वामिनारायण धर्म अंगीकार करके जब वे घर आये तब स्वंय इन दोनो रचनाओं को अग्नि में जला दिये । उन्होंने सोचा कि इन रचनाओं को संसारी लोग बांचेगे गलत मार्ग पर चलकर पाप कर्म मे प्रवृत होंगे । इसलिये उन्होंने उसे भस्मीभूत कर दिया । इस तरह १५ वाँ वर्ष लगते ही दलपतराम रस की विभत्स वो जीती । पुण्य की अग्नि प्रगट करके बिभत्स श्रृंगारी रचना (कृति) को जलाकर मानो रसनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त किया हो ।

इसके बाद के समय में दलपतराम काव्यदीक्षा लिये । जिस तरह धर्म दीक्षा के गुरु भूमानंद स्वामी थे उसी काव्य दीक्षा के गुरु भी अत्यन्त निर्मानी संत देवानंद स्वामी बने । ग्रीष्म उतरकर आषाढ बैठ गया । मामाने कहा, दलपत ? श्रावण मास में तूं मूली में रहकर मेरे लिये भगवान पर तुलसी चढाये तो मैं तुम्हें दो रुपये दूंगा । मामा का विचरा था कि देव कार्य भी होगा और साथ में सन्त समागम भी होगा । दलपतराम तैयार ही थे।

उस समय मूली में महन्त के पद पर स.गु. देवानंद स्वामी थे । उस समय वे अपने गुरु ब्रह्मानंद स्वामी के कार्य को पूर्ण कराने में लगे थे । स्वरुपानंद स्वामी तथा लालो कोठारी इस तरह ए दोनो कोठारी थे। घनश्याम स्वामी मुख्य ब्रह्मचारी थे । स्वेत वस्त्र धारी गृहस्थ दलपतराम मंदिर में रहने लगे और संतो की सेवा करने लगे । उन दिनो वे अपनी कविताओं को सुनाकर सभी के मनजीत रहे थे । जैसे -

गप्पी ने घेर गप्पी आव्या
आओ गप्पीजी ।
बार हाथनुं चीभढुं ने तेर
हाथनुं बी !''

छाया एटलां छापरांने मल्या एटलां घर ।

भोजो भगत तो एम जाणे जे वाढा एटलां वर ॥

(यह दलपतराम द्वारा रचित हूडला है)

दलपतराम प्रतिदिन सभा मंडपमें आकर बैठते थे । देवानंद स्वामी के कीर्तन सुनते । देवानंद स्वामी छन्द

नहीं बनाते थे कीर्तन बनाते थे । उसमें भी वैराग्य प्रधान कीर्तन बनाते थे । संत सदा सद्‌बोधही देते हैं न ? भाव वाही त्याग प्रधान मधुर कीर्तन सुनकर दलपतराम की जिज्ञासा बढने लगी । स्वामी के कीर्तन अधिक सुनने बांचने लगे । स्वामी के प्रति भक्ति बढती गयी । उनकी काव्य शास्त्र की कुछ शंकाये स्वामी से पूछे । स्वामी के उत्तर से एन्हें परम शान्ति मिलती थी । अन्त में दलपतराम ने देवानंद स्वामी को अपना काव्यगुरु बनाया और उन्हीं से पिंगल शास्त्र पढने लगे ।

संवत् १८९० से १८९७ तक दलपतराम देवानंद स्वामी के पास काव्य शास्त्र का अध्ययन किये । अब वे युवान हो गये थे । प्रथम उन्होने भाषा भूषण नामका अलंकार ग्रन्थ तथा छन्द श्रृंगार नामका पिंगल शास्त्र का अध्ययन किया । उनके सहाध्यानी वैष्णवानंद ब्रह्मचारी थे । मुक्तानंद स्वामी विरचित भाषा ग्रन्थ - सत्संग शिरोमणि तथा विवेकचिंतामणि इन दोनो ग्रन्थों को स्वामी से पढे । प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री इन दोनो को अपने पास बुलाकर शास्त्रो की चर्चा की योग्य जानकर खूब प्रसन्न हुये । ब्रह्मचारी वैष्णवानंदजी को भगवान स्वामिनारायणने भुज अध्ययन के लिये भेंजा । उन्होंने देखा कि दलपतराम स्वयं शास्त्र में निपुण हैं इसलिये केवल ब्रह्मचारीजी को अध्ययनार्थ भेंजे ।

उस समय व्रज भाषा ही राजभाषा थी । मंदिर भाषा तथा तीर्थ की भाषा भी वही थी । ऐसे समय में दलपत रामने गुरु देवानंद स्वामी से प्रेरणा लेकर गुजराती भाषा में छोटे-छोटे कीर्तन बनाने लगे । आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी की आज्ञा से उन्होंने संवत १८९६ में श्री पुरोत्सव तथा शाकोत्सव इस तरह दो काव्य लिखे।

दलपतराम की स्मरण शक्ति तेज थी । शिक्षापत्री उनका धर्मग्रन्थ था । शिक्षापत्री को वे विधि-निषेधग्रन्थ मानते थे । दलपतराम को २१२ श्लोक कंठस्थ था । वे २१२ श्लोक उल्टे से भी बोल जाते थे । इसे प्रति लोम पाठ भी कहते हैं ।

संवत् १८९७ में जन्माष्टमी के अवसर पर वैष्णवानन्द स्वामी भुज से पढकर मूली आये । उत्सव चल रहा था । महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी भी वहाँ पधारे हुये थे । महाराजश्रीने दोनो शिष्यों की परीक्षा ली । महाराजने कहा कि श्रीजी की बाल लीलापर २० जैसे छन्द की रचना कीजिये । आठ दिन की अवधिबताई थी । उतने समय में दोनों ने कविता की रचना की और दोनो का सन्मान किये । स्वामी को चादर ओढाये तथा दलपतरामजी को टोपी पहनाये । दोनो से कहे कि आप दोनो सत्संग को अजागर कीजियेगा । दलपतराम को सम्प्रदाय का मान्य कवि घोषित किये । जीवन पर्यंत महाराजश्री की टोपी धारण करते रहे और आज्ञा में रहे आचार्य महाराजश्री के सामने जो छन्द दलपतरामने सुनाया था । वह उनकी कल्पना शक्ति थी : जैसे -

(१) श्रीजी महाराज को जब छींक या जमुहाई आती तब वे मुख के ऊपर रुमाल रखते थे, वह इस लिये कि यशोदा मा भगवान कृष्ण के जमुहाई खाने के समय पूरा ब्रह्मांड देखी थी, यहाँ हरिभक्त मेरे मुख में ब्रह्मांड न देखें ।

(२) श्रीजी महाराज जब भोजन करने बैठते तब मस्तक पर रुमाल या डुपट्टा रखते थे। कान खुला रखते थे। दलपतराम कहते है कि गौ, ब्राह्मण साधु के दुःख को सुनने के लिये कान खुला रखते थे । भगवान कान ढंकदें तो सुनेगा कौन ?

(३) श्रीजी महाराज की एक चेष्टा ऐसी थी कि कभी वे एक मनका माला में फेरते तो कभी दो दो मनका फेरते । इस वात को दलपतराम अपने काव्य में लिखते हैं कि श्रीजी महाराज जब माला फेरते तब वे धर्म स्थापना तथा अधर्म को उखाड़ने के लिये खितनी बार हम जन्म लिये तथा कितने भक्तों का उद्धांर किये इसी का लेखा जोखा करने के लिये माला फेरते हैं ।

कैसी अद्‌भुत कल्पना शक्ति दलपतराम की । श्रीजी महाराज की स्वाभाविक चेष्टाओं में भी कैसी चेतना शक्ति, कितनी मार्मिक निचारधारा छन्दो में है । स.गु. देवानंद स्वामी के सेवा छन्द के रुप में महाराज की कृपा से प्राप्त हुई थी । इस में आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की प्रेरणा मूलभूत थी साथ में आशीर्वाद मिला हुआ था । तो बाकी क्या वचता है ।

(क्रमशः)

छपैया प्रसादी के स्थानो का जीर्णोद्धार

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ने नवखंड में छपैयाधाम को अपने जन्म को धारण करने के लिये स्वीकार किया । सोलह चिन्हों अलंकृत चरणारविंद से बाल्यावस्थामें यहीं पर बाललीला किये थे । उस बाल लीला के स्थान को जर्जरित देखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रेरणा से सुरत के श्री नरनारायणदेव की निष्ठावाले हरिभक्त श्री नंदुभाई खेमचंदभाई पटेल .पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प को पूर्ण करने के लिये जो संकल्प लिया था करीब २-३ वर्षो से यह काम चल रहा था प्राय: प्रसादी के सभी स्थान नये रुप को प्राप्त हो गये हैं । महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी की महंथाई में हुये इस कार्य में उन्हें जिन हरिभक्तों ने सहयोग दिया था उनके नाम अधोनिर्दिष्ट है

(१) **गौघाट :**

(१) प.भ. पटेल नंदुभाई खेमचंदभाई (मु. मोटप) सुरत ।

(२) प.भ. परमार भगवानजीभाई भुराभाई जोधाणी (ढसा-आंबरडी-सुरत)

(२) **चंदनमासी का घर :**

प.भ. जनकभाई गोकलभाई पटेल (अमदावाद)

(३) **भूतियो कुवो :**

गं.स्व. गौरीबहन अमृतभाई पटेल जतीनभाई ए. पटेल तथा रीतेषभाई ए. पटेल (अमदावाद)

(४) **काली दैत्य का मोभ :**

कौशलेन्द्र गार्डन झूला (झूलावाल) प.भ. पटेल अमृतभाई शिवाभाई, प.भ. पटेल जयन्तीभाई शिवाभाई (विहारवाला) अमदावाद

(५) **कल्याण सागर श्री हनुमानजी का मंदिर नूतन निर्माण :**

प.भ. कौशिकभाई सी. जोषी, घनश्याम ईन्जिनीयरिंग ईन्डस्ट्रीझ अमदावाद ।

इसके अलांवा अन्य स्थलो का जीर्णोद्धार का कार्य चालु ही है । जो स्वल्प समय में पूरा किया जायेगा । अब आप छपैया दर्शन करने जांय तब इन स्थलों का अवश्य दर्शन करें, इन स्थलों के दर्शन में आपको अलग ही आनंद की अनुभूति होगी । इस के अलांवा तीर्थ की पवित्रता का भी अनुभव होगा । प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण भगवान के स्पर्श वाली वस्तुओं के रखरखाव हेतु श्री स्वामिनारायण म्युजियम की रचना की, उसी संदर्भ में प्रसादी के स्थलों के रखरखवा के लिये जो शुभ संकल्प किया गया वह अब चरितार्थ हो रहा है । इन स्थलों का माहात्म्य हरिभक्तों को समझमें आवे ऐसी व्यवस्था की गयी है, इसके लिये समग्र सत्संग चिरकाल तक उनका ऋणी रहेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

जेतलपुर की गंगा मां की रसोई

जेतलपुर की गंगामां रामानंद स्वामी की शिष्या थीं । भगवान श्री स्वामिनारायण को वे पुत्र कहकर बोलाती थी और अपने हाथ का बनाया भोजन कराती थी । भगवान जब गुजरात में विचरण करते हों उस समय गंगा मां भगवान की रसोई बनाने के लिये सेवा में रहती थी । भगवान जब गाँव-गाँव फिरते तब गंगामां अपने मस्तक पर भोजन बनाने के साधन रखकर महाराज जिस स्थान पर रुकते वहाँ पहुँचकर गरम गरम भोजन बनाती थी । महाराज उसे बड़ी श्रद्धा के साथ खाते थे । प्रभु के प्रति कैसा प्रेम ? इसको अलांवा रसोई के वासन जैसे-तसली, खरल थाली, कटोरी इत्यादि वस्तुयें आज भी विद्यमान हैं ।

उपरोक्त सभी वस्तुए श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ४ में भक्तजनों के दर्शनार्थ रखी गयी हैं ।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।

मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789

नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंध : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जन-२०१५

रु. २५,०००/-	अ.नि. छोटाभाई रणछोडभाई पटेल के मोक्षार्थ कृते विपुलभाई - अंबापुर।
रु. २५,०००/-	एक हरिभक्त - संतरामपुर - संकल्प पूर्ण होने के निमित्त।
रु. १८,४६०/-	किरीटभाई अमृतभाई - वडनगर वाला - मुंबई।
रु. ११,५००/-	वर्षाबहन अश्विनभाई सोनी - न्यु राणीप।
रु. ११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - अमदावाद।
रु. ७,५००/-	अशोकभाई छगनभाई पटेल लींबडीया - अधिकमास में अभिषेक के निमित्ते।
रु. ५,१०१/-	शंकरभाई हरिभाई पटेल के मोक्षार्थ, कृते केतनभाई - मनुभाई, भावेशभाई, मनुभाई - उवारसद।
रु. ५,००१/-	रमेशभाई भक्तिदास पटेल राजपुरवाला - न्यु राणीप चि. भाविकभाई विजा मिलने के उपलक्ष्य में।
रु. ५,००१/-	अ.नि. तिताजी रत्नाजेसा - फोटडी (कच्छ) अ.नि. माताजी कानबाई कृते केशरभाई रत्ना - लालभाई।
रु. ५,०००/-	कान्तिभाई पटेल - न्युजीलेन्ड।
रु. ५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपुर (सु.नगर) तथा अ.नि. नरनारायणदासजी स्वामी स्मृति महोत्सव के निमित्त कृते - पार्षद कालू भगत।
रु. ५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी, बोपल।
रु. ५,०००/-	एक हरिभक्त - संतरामपुर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जून-२०१५)

ता. ५-६-१५	चिरागभाई काछडीया - नवसारी वर्तमान में आस्ट्रोलिया
ता. ६-६-१५	चौधरी भेरोराम समरपाजी - वाली (राज.)
ता. १४-६-१५	जीग्नाशाबहन वीरेन्द्रकुमार देसाई - नवरंगपुरा।
ता. १७-६-१५	श्री स्वामिनारायण महिला मंडल - हर्षदकोलोनी।
ता. १८-६-१५	(प्रातः) देवर्षि प्रहलादभाई पटेल (राणीप) (दोपहर) सां.यो. बडी रामबाई पुआजी, तथा नानबाई एवं रामबाई सम्पूर्ण धर्मकुल का पदार्पण कराकर - उसके निमित्त कच्छ-मानकुवा
ता. १९-६-१५	श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला मंडल - नारणपुरा।
ता. २१-६-१५	(प्रातः) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - श्री स्वामिनारायण घाटलोडीया। (दोपहर) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कृते सुमनभाई-साबरमती।
ता. २७-६-१५	महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) दरबारगढ मोरबी तथा हलवद कृते सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा, नीताबा।
ता. २८-६-१५	(प्रातः) श्री नरनारयण युवक मंडल - लुणावाला। (दोपहर) सत्संग समाज स्वामिनारायण मंदिर - कृते उदयनभाई महाराजा - विसनगर।
ता. ३०-६-१५	भक्तिमंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर - कोठंबा

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मोहनवरने मान संगाथे वेर जो

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

रसवस होई रही रसिया संग
ज्युं मीसरी पयमांही भड़ी ।

जब जीव प्रभु मय हो जाता है, भक्ति रस में तरबोर हो जाती है तब भगवान भक्त से दूर नहीं रहते । लेकिन प्रभु को प्रेममय करना (प्रेम से पिघलाना बड़ा कठिन हैं । अहंकार जीव को प्रभु की भक्ति में लीन नहीं होने देता । अहंकार को भी दूर करना बड़ा कठिन है । कोई डाक्टर कहे कि भोजन कम कर दो तो वजन कम कर देंगे । वजन घटना अपने हाथ में है । लेकिन शास्त्र या संत कहें कि अहंकार घटा दो, आप के अहंकार की मात्रा अधिक है । डेन्जर लाईन पर है, लेकिन अहंकार घटे कैसे ? जब परमात्मा की कृपा होगी या कोई दैवी शक्ति या सत्पुरुष की कृपा होगी और उन्हीं की आज्ञा में जीवनका व्यवहार होगा तो अवश्य अहंकार घटेगा ।

एक अहंकारी व्यक्ति स्वयं को सिद्धपुरुष मानता था । आंध्र प्रदेश का रहने वाला था । उस के पास कुछ सिद्धि थी । उन सिद्धियों की अपेक्षा अहंकार अधिक था । ''कोई मेरे सामने आवे मैं उसे खबर पड़ा दूं । यह खबर पोरबन्दर के राजा के पास पहुंची । राजा के सामने देखकर कहा कि १० हजार रुपये दे दो, नहीं तो तुम्हारे शहर को समुद्र में फेंक देंगे । हम ऐसा मंत्र पढेगे कि समुद्र तुम्हारे शहर तक आकर डुबादेगा ।

राजा बुद्धिशाली था, वह विचार किया की इसे किसी भी युक्ति द्वारा विदा करना पडेगा । राजाने सिद्ध पुरुष से कहा कि हे सिद्ध ? एक सत्यवात कहूं हमारे जैसे छोटे राजा को परेशान करने से वाह-वाह नही होगी, आप स्वामिनारायण के पास जाइये, उन्हें अपने वश में करो । उन्हें वश में करने से आपकी सिद्धि का फायदा है । अन्यथा हमारे जैसे को डराने धमकाने से कोई फायदा नहीं है । कहाँ हे स्वामिनारायण ? इस गुजरात के सौराष्ट्र में धूम रहे हैं । उस सिद्ध को अभिमान था । स्वामिनारायण कौन ? उसे वश करना हमारे हाथ का खेल है । अभी स्वामिनारायण को वश में करके तुम्हारे पास आता हूँ । ऐसा कहकर मग्नीराम स्वामिनारायण भगवान के पास जा पहुँचा । उस समय भगवान स्वामिनारायण मांगरोल में सभा के मध्य में विराजमान थे। वहाँ पर जा पहुँचा ।

ऐसा दिव्य वातावरण था । वातावरण में ऐसी दिव्यता, शीतलता थी कि प्रवेश करते ही हृदय शीलत हो ...

जाय उसे तुरंत शीलता-शान्ति का अनुभव होने लगता है । लेकिन कोट, मोजा, टाई लगाकर प्रवेश करे तो शीतलता मिलने में समय लगता है । इसी तरह उस सिद्ध पुरुष को यहाँ की शीतलता प्राप्त न हो सकी । कारण यह कि वह अपने मन पर अहंकार की कोट पहन रखी थी । भीतर प्रवेश करते ही प्रभु की दृष्टि पड़ते ही वह सिद्ध नरवस हो गया । उसका कुछ चला ही नहीं । लाचार होकर परेशान होकर अपने स्थान पर जाकर मंत्र-तन्त्र करने लगा । आराध्य देवी को बुलाकर कहने लगा कि तुम्हारी कृपा से जो मुझे सिद्धि मिली थी, उसी से मैं सर्वत्र विजयी होता था लेकिन स्वामिनारायण के आगे वह सिद्धि काम नहीं की और मैं नरवस होगया ।

शक्तिने कहा कि हे मूर्ख ? वे साक्षात् परमात्मा हैं । हमारे जैसी अनेको शक्ति के स्वामी है । तुम्हे मोक्षकी प्राप्ति करनी हो तो उनकी शरण में जा और चरण में गिरकर नमस्कार कर । उस में ज्ञान तो था लेकिन अहंकार रुपी कोट लगने से वह पहचान नहीं पाया, दैवी शक्ति ने अहंकार दूर कर दिया ।

अब वह दूसरे दिन उसी दिव्य सभा में पहुंच गया । संत-भक्त तथा भगवान को दंडवत किया और हाथ जोडकर माफी मांगने लगा । आपकी शरण में आया हूँ । भगवान स्वामिनारायणने देखा कि नमन तो कर रहा है लेकिन अहंकार अहंकार अभी है या नहीं यह जानने कि लिये बोले ''हमारी शरण में आये तो है लेकिन आपको अपना मुंडन कराकर रास्ते में अपना बाल फेंकना होगा । उसी बल पर चलकर लोग आवें जावें । उसने जैसी आज्ञा कहकर शिरोधार्य किया । इससे भी बड़ी कसौटी महाराजने एक और किया -

आपको हमारे साथ रहना हो तो सभा में जितने लोग बैठे है उन सभी के जूता-चंपल बाहर पड़े हैं सभी एकत्रित करके एक कपडें में बांधकर माथे पर रखकर पूरी सभा की तीन प्रदक्षिणा करनी होगी । जैसी आज्ञा

हुई तुरन्त पूरी भी कर दिये । धन्य है उस नम्रता को । कोई कच्चे मन वाला हो तो उसके मन में हो जायेगा कि कंठी बांधनी हो तो बांधो अन्यथा कहीं अन्यत्र जा रहे हैं । आप ही मात्र तो हैन नहीं । धन्य वे मग्नी रामजी हैं और उनकी नम्रता भी धन्य है । स्वामिनारायण भगवान को ऐसा हो गया कि अब अहंकार खत्म हो गया है । उन्हें अपनी शरणागति में लेलिये । संत बनाये और उनका नाम अद्वैतानन्जी रखे । फिर भी देवीवाले मगनिराम जाने जाते थे ।

स्वामिनारायण भगवान तो सर्वान्तरयामी है वे सबकुछ जानते थे फिर ऐसा क्यों किये ? तो हम सभी को उपदेश देने के लिये किये । जब तक जीवन में अहंकार रहेगा तब तक जीव परमात्मा के साथ जुड़ नहीं सकता । अहंकारी जीव परमात्मा तक नहीं पहुंच सकता । हे भक्तों ! ऐसा दिव्य वातावरण उत्तम भक्ति का, भजन का, सत्संग का योग भगवान की कृपा से हम सभी को मिला है, इस लिये हम भी विनम्र होकर, निर्मानि होकर ठाकुरजी की शरण में रहेंगे तो ''ब्रह्मानंद स्वामी''के शब्दो में अपना जीवन सार्थक कहा जायेगा ।

रसबस होई रसिया संग,
ज्यु मोसरी पय माही भड़ी.....

सेवकराम के सगे भाई

- नारायण बी. जानी (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवानने प्रथम के वशने वचनामृत में सेवकराम की वात स्वमुख से कही हैं । जब स्वामिनारायण भगवान वर्णिवेश के रुप में वनविचरण कर रहे थे तब वे तिरुपति बालाजी से सेतुबंधरामेश्वर जा रहे थे तब रास्ते में कोई वैरागी रास्ते में बिमार मिला । स्वामिनारायण उसके पास रुक गये । वह जो भी खाता वह पचता नहीं था सब निकल जाता था । उसकी दुर्दशा देखकर महाराज सेवा-चाकरी करने लगे । केले के पत्ते पर सोने की व्यवस्था करते, उसे बिगाड दे तो बदल कर दूसरा बीछाते । जब परमात्मा स्वंय जिसकी सेवा करे उसे कोई रोग रहि सता है क्या ? सेवा करते करते १ महीना हो गया, अब वह पूर्ण स्वस्थ हो गया । महाराज कहते कि १ शेर घी पचा जाये ऐसा हो गया । प्रभु उसकी सेवा नहीं किये होते तो वह वहीं पर महर गया होता । उसकी भाग्य से ही परमात्मा उसे मिल गये । प्रभु स्वयं भिक्षा मांग कर ले आते और उसे खिलाते, लेकिन स्वयं उपवास करते । जब पूर्ण स्वस्थ होग या तब यात्रा के लिये चल दिया और महाराज के माथे पर १ मन का बोजा उठवाता था । उसे हुआ कि हमे एक चेला मिल गया । उसे यह नहीं भाव आया कि, हमारी सेवा करने वाला कौन है । कई गुण उसमे नहीं आया । महाराज बगल में भूके-प्यासे हों स्वयं भिक्षा मांगकर लाये हों वह स्वयं अकेले सपरचट कर जाता था । ऐसे व्यक्ति को कृतध्नी कहा गया है । श्रीहरि स्वयं कहते हैं कि ''पछी अमे कृत्ध्नी जाणी तेनो संगनो त्याग कर्यो ।''

यह तो सेवकराम की वात है लेकिन क्या सेवक राम के किसी सगे भाई को आप जानते हैं? तो आज सेवकराम के भाई का हम यहाँ परिचय करा देते हैं । आप विचार कीजिये कि भगवान का जीवो के उपर कितना उपकार है । जैसे माता के गर्भ में वे ही रक्षा करते हैं, पोषण करते हैं । जन्म के बाद दांत न रहने पर माता के रुधिर में से दूधबनाकर बालक का पोषण करते हैं ? इस शरीर की रचना भी अजब की है । आंख से सभी दृश्य दिखाई देता है, कान से सबकुछ सुनाई देता है । नाक के सुगन्धदुर्गन्धसूंधने की शक्ति, भोजन के लिये मुख स्वाद के लिये जिह्वा इति ईन्द्रियो की रचना की, इसके अलंवा हाथ-पैर, फेपसा, कीडनी, आंख-कान जिसकी कीमत नही की जा सकती इस तरह उस परमात्मा का उपकार (ऋण) हम सभी पर है । विचार करने लायक है - कोई व्यक्ति सहयोग के लिये कुछ रुपये देता है तो व्याज मांगता है या अपने रुपये मांगता है, लेकिन परमात्मा इतना सबकुछ देकर भी मांगने की चाहना ही नही रखता । उस में बदले की भावना नहीं है । खेत में एक दाना डालने पर अनेक दाने के रुप में प्राप्त होता है । यह उपकार किसके है ? घर में पानी आता है उसके बदले में सरकार कर लेती है । लेकिन परमात्मा आकास से मीठा जल वरसाते हैं लेकिन उसके बदले में कोई कर नहीं लेते । घर में विजली से पंखा चलता है बत्ती होती है इसका बिल आता है, जब कि भगवानने सूर्य को सदा प्रकाशित रखा है रात में चन्द्रमा की व्यवस्था की है, पवन को पंखा के रुप में रखा है फिर भी किसी के घर बिल आया ? यह विचार किसीने आज तक किया ? इस तरह विचार करें और लेख लिखें तो लिखते ही रहजांय अन्त नहीं आयेगा ।

कहने का भाव यह है कि परमात्मा भगवान स्वामिनारायण ने अथक परिश्रम करके सभी को सुखिया किया है, फिर भी जीव प्रभु की भक्ति नहीं करता, अपनी कमाई में से १० या २० प्रतिशत प्रभु को अर्पण विना किये अकेला खाता है । ऐसी दुर्लभ शरीर को प्राप्त करके सेवा-उपासना न करे तो कृतध्नी कहा जायेगा । इसी को सेवक राम का सगा भाई कहा जायेगा । ऐसा ही भगवानने सेवकराम को किया और सेवकराम कृतध्नी जैसा व्यवहार प्रभु के प्रति किया जिसके कारण उसका साथ प्रभुने छोड दिया था ।

आप सभी के साथ प्रभु ऐसा न करे इस लिये आप सेवकराम जैसा व्यवहार कभी मत करना । प्रभु में

॥ भक्तिसुधा ॥

एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर (कालुपुर मंदिर हवेली) प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "प्रयास करने पर सबकुछ संभव है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

इस मनुष्य देह मिलने के बाद महाराजने सब से बड़ी वस्तु यह दी है कि, हम जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं। लेकिन हम प्रयास ही नहीं करते यह प्रयास करते तो सबकुछ संभव है। हमें जो मनुष्य देह मिली है उसकी बराबरी किसके साथ होती है तो - रथ, अश्व, लगाम, सारथी, मुसाफिर इत्यादि के साथ होती है। अपनी शरीर रथ है। दश इन्द्रियां ही अश्व हैं, लगाम-मन हैं, सारथि - बुद्धि है, मुसाफिर आत्मा है। अश्व किसके आधीन रहता है - लगाम के लगाम से हम अश्व को जिधर चाहें उधर लेजा सकते हैं। इन्द्रियरुपी अश्व मन के आधीन है। लगाम सारथिने आधीन है। सारथि अर्थात् बुद्धि यह मुख्य कही गयी है। वह इस लिये कि बुद्धि निर्णय लेती है। मुसाफिर आत्मा है - उसे कहाँ जाना है तो उसे यह खबर है कि मुझे परमात्मा के पास जाना है। लेकिन इस जगत में आने के बाद माया रुपी आवरण से ढक लिया जाता है इस से बुद्धि भ्रमित हो जाती है। जब ज्ञान रुपी प्रकाश मनुष्य के जीवन में होता है तब उसका संशय मिट जाता है, लेकिन पुन: माया के प्रपञ्च में फसता है और पुन: भूल जाता है। इसके लिये आवश्यक यह है कि बुद्धि को शुद्ध, सात्विक, निर्मल रखना पडेगा। भगवान को तो निर्मलमन ही चाहिये। इन्द्रियों से भी भगवान की सेवा होती है - हाथ से, आंख से, मुख से, कान से इत्यादि इन सभी साधनो से भगवान के सुंदर स्वरुप का दर्शन का परमात्मा में जुडना परमावश्यक है। मन-बुद्धि को जाग्रत रखने जरुरत है। हम अलग-अलग जगहों पर दौडते रहते हैं, जहाँ जिसे सुख दिखाई देता है वहाँ पर जाता है। मन स्थिर तो है नहीं, यहाँ वहाँ भटकता रहता है। एक ही स्थान वह है जहाँ पर मन ५०% एक ही जगह रहता है वह है सत्संग। मन रुपी पक्षी किसी भी समय किसी वृक्ष पर जा सकता है, जिस वृक्षपर बैठता है उस वृक्ष के फल को खाता है। इसी तरह मन में जैसा विचार आयेगा वैसा फल मिलेगा, वैसा कार्य होगी।

इन्द्रियों की टेव है कि वह गलत दिशा में ले जाती हैं। बाद में भले पश्चाताप होता है। माया का भी ऐसा है। भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यकाल की जो वस्तु है ही नहीं उसे भी मान लिया जाता है। इसे ही आवरण कहते हैं। परमात्मा का सच्चा ज्ञान रुधजाता है। हम इन्द्रियों से जो सुख भोगते है उसे सच्चा सुख मानते हैं और स्थाई मानते हैं, यह सब माया के द्वारा आवृत होने के कारण होता है। सर्पिणी अपने बच्चे को स्वयं खा जाती है। इससे यह समझना चाहिये कि माया से ही मानव का पतन होता है। माया ही मनुष्य खाती है। संसार की जो भी वस्तु है वह नष्ट होने वाली है। फिर भी कभी विचार नहीं किये। हम किसी को जानबूझकर १०० रुपये देते हैं तो दु:ख नहीं होता, इसी तरह संसार के प्रति अनासक्त भाव रहने से अन्तिम समय में दु:ख नहीं होगा।

परमात्मा की प्राप्ति के लिये अनासक्त भाव रहकर भजन करना चाहिये। विना प्रयास के हम सभी को पारसमणि रुपी सत्संग मिल गया है। सत्संग के बाहर जाकर देंखे तो खबर पडेगी कि लोग कितने दु:खी हैं। महाराजश्री सदा कहते रहते हैं कि बाहर की दुनिया देखने लायक नहीं हैं। हम सभी सत्संग को लेकर इतने सुखी हैं। महाराज तथा नंद संत उस समय खूब दु:ख सहे हैं। हम सभी के लिये मंदिर, संत, शास्त्र प्रत्यक्ष दिये हैं . हमें मात्र महाराजकी आज्ञा में रहने की जरुरत है। हम सभी के लिये सत्संग के माध्यम से अक्षरधाम का मार्ग खोल दिया।

जिन्हें भी यह सत्संग मिला है वे सभी सुखी हैं। रास्ते स्वयं तप करने होंगे, हम किस रास्ते पर चलें। सत्संग के रास्ते पर चलने के बाद भी परिवर्तन न हो तो समझना चाहिये कि वाह्य जगत के अथवा गलत जगह पर कहीं

आपका मन फंसा हुआ है। अन्तर के भाव पवित्र रखना होगा। जैसे अन्तर में वैसा ही नाट्य में होगा तभी परिवर्तन होगा। कौआ और कोयल की वात जीवन में रखनी होगी। नीरक्षीर विवेक करने वाले हंस जैसा आचरण करना होगा तभी सत्संग का प्रतिफल मिलेगा अन्यथा बगले की तरह ढोंग की वात होगी। मजदूर का बालक हंसते-हंसते पत्थर में सो जाता है। हम बंगले में रहते हैं फिर भी दु:खी रहते हैं। ए.सी. में बैठे-बैठे भी कंटाल जाते हैं। मजदुर ४-५ रोटी खाकर पचा जायेगा क्योंकि वह श्रम करता है। जो खाता है उसका रस बनता है, इसी से वह स्वस्थ रहता है और मजबूत रहता है। हम घर में बैठे-बैठे २ रोटी भी नहीं पचा पाते क्योंकि विना परिश्रम के खाने को मिल जाता है। इसी तरह यहाँ पर भी विना श्रम के संत, शास्त्र, सत्संग मिल जाता है। इसके लिये कोई प्रयत्न करना नहीं पडता। परंतु जिसे श्रम करना है वह तन, मन से चिन्तन करके परमात्मा को प्राप्त कर लेगा। परमात्मा की भक्ति में हम बहुत गरीब हैं। अपने भीतर कमी का सदा चिन्तन करते रहना चाहिये। अहंकार रहित होकर सत्संग करना चाहिये, तभी भगवान की प्राप्ति संपन्न है। अन्य था भटकने वाली वात होगी।

●

सेवा की महिमा

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

स्वामिनारायण संप्रदाय अर्थात् सेवा का संप्रदाय। प्रिय भक्तों ! अपने उपास्य इष्टदेव ''सेवा मुक्तिश्च गम्यताम्'' सेवा से ही मुक्ति है। इसी तरह भगवान श्री स्वामिनारायणने सेवा की महिमा बताते हुये गढडा मध्य प्र. के. २८ वें वचनामृत में कहा है कि ''जे भगवान ना भक्तनी सेवा-चाकरी करे ते ऊपर तो अमारे अतिशे राजीपो थई जाय छे। अने जेवुं रुडुं थाय छे ते पण भगवानना भक्तनी सेवा करवी एज छे। अने भगवानना भक्त नो द्रोह करवो एज भगवानने कु राजी करवानो उपाय छे. (.म. का. २८ वां वचनामृत) सेवा का मूल्य अमूल्य है। भगवान श्री स्वामिनारायण ने छोटे वालक से लेकर बड़े सद्गुरुतक की सेवा कीबात की है। इसी लिये आज भी संप्रदा यमें सेवा का प्राबल्य है। सेवा में दो अक्षर है –

स = सहन शक्ति, व = वाह वाह से दूर रहता।

किसी भी सेवक की सेवा कब प्रकाशित होती है जब उसमे सहन शक्ति हो तथा वाह वाह से दूर रहे। सेवा छोटी हो या बड़ी सेवा – सेवा होती है। सेवा भाव से करनी चाहिये, तभी यथार्थरुप में सेवा कही जायेगी और उसका फल मिलेगा। राजपाट छोड़कर जंगल में जाकर झोपड़ी बांधकर रहना सहज है लेकिन संत-भक्तों के बीच में रहकर सेवा करना बड़ा कठिन है। भगवान श्री स्वामिनारायणने सेवा का महत्व स्वयं अपने क्रियाओं द्वारा प्रदर्शित किया है – गढडा मंदिर निर्माण के समय स्वंय माथे पर पत्थर रखकर पाये डाले थे, यह सब से बड़ा उदाहरण है। सेवा करना हमारी फरज है। संत का समागम करने के बाद ही सेवा का ख्याल आयेगा। अन्यथा संभव नहीं है।

स.गु. गुणातातीनंद स्वामीने समागम तथा सेवा का सुंदर अर्थघटन किया था। ४० वर्ष मास ४ दिन तक जूनागढ में अविरत समागम करवाये थे। इसी तरह ४० वर्ष तक सेवा भी किये थे। उन से एक मंहत मिलने के लिये आये उस समय स्वामीजी झाडूं लगा रहे थे, महंतने कहा हमें स्वामी से मिलना है, स्वामीजीने कहा कि थोडा समय आप बैठे – मिलते हैं। स्वामीजी झाडू लगाकर – स्नान करके महंत के सामने खड़े हो गये और कहे कि कहिये महंत स्वामीजी ? महंतजीने कहा कि आप से नहीं मिलना है गुणातीतानंद स्वामीजी से मिलना है, तब स्वामीने कहा कि मैं स्वयं गुणातीतानंद स्वामी हूँ, कहिये क्या काम है ? यह सुनकर महंत स्तब्धरह गये। उनके मन में हुआ कि इतने बड़े पद होते हुये भी इतनी निर्मानीपना सेवा का भाव। जिस में सेवा का भाव होता है वही दास हो सकता है। सेवा से ही अहं तत्व नष्ट होता है . सेवा के विना सद्गुरु की भी शोभा नहीं। दासभाव से जहाँ रहता है वही सद्गुरु है। सेवा से जीवात्मा की शुद्धि होती है। सेवा से मोक्षपद मिलता है। मान-ईर्ष्या से रहति होकर सेवा करनी चाहिये। अपने भारतीय धर्म शास्त्रों में मोक्ष के अनेक साधन बताये गये हैं। जिसमे व्रत, जप, तप, दान, यज्ञ, सेवा, भक्ति, इस में श्रेष्ठ साधन सेवा है। सेवा से अप्राप्य व्यवस्तु की प्राप्ति होती है। सेवा से ही वृहस्पति गुरु के पुत्र कच शत्रओं के गुरु शुक्राचार्य से संजीवनी विद्या सीखी थी। वह विद्या देव गुरु वृहस्पति के पास नहीं थी। देवताओं ने वह विद्या प्राप्त करने के लिये गुरु वृहस्पति के पुत्र कच को शुक्राचार्य के पास भेंजा।

कच शुक्राचार्य के पास जाकर कहा कि मैं देवगुरु वृहस्पति का पुत्र कच हूँ १००० वर्ष से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा हूँ अतः हमें विद्यादान कीजिये। शुक्राचार्य ने कहा ठीक है - मेरी गायों को चराओ और मेरी बेटी देव्यानी जैसा कहे वैसा करो। बाद में कच ५००० वर्ष तक इस प्रकार सेवा की। लेकिन दैत्यों को पता चला कि देवताओं के पक्ष से संजीवनी विद्या सीखने के लिये गुरुदेव वृहस्पति का पुत्र आया है, इसलिये गोचारण के समय डरने मार डाले। सायंकाल गांयो के साथ कच को नआया देखकर शुक्राचार्य ने अपनी मृत संजीवनी विद्याका प्रयोग किया तो वह जीवित होकर आ गया। शुक्राचार्य ने पूछा क्या हुआ था, तो कचने बताया दैत्यो ने मुझे मार डाला था। दूसरे दिन फूल लेने के लिये भेंजे तो वहाँ उसे मारकर जला करके भस्म बनाकर गुरुजी को दैत्यों ने शुद्ध में दे दिया। पुनः संजीवनी विद्या का प्रयोग किये तो वह पेट में से बोला कि मैं आपके के पेट में हूँ मुझे दैत्यो ने मारकर भस्म बनाकर शहर के साथ आपको देदिया। यह सुनकर शुक्राचार्य ने कहा कि मैं तुम्हे अपनी संजीवनी विद्या देता हूँ, मेरा पेट फाडकर बाहर आकर मेरे मरजाने पर जिला देना, कृतध्नी मत होना, यही ब्राह्मण की पहचान है। वह बाहर आया और उस विद्या का गुरु के ऊपर प्रयोग किया गुरुजी भी जी गये। यही सेवा का प्रतिफल है। गुरु सेवा से प्रसन्न होकर अपनी मृतसंजीवनी विद्या कच दे दिये। अप्राप्य वस्तु की प्राप्ति भी सेवा से होती है।

•

प्रसादी का जल

- पटेल लाभुबेन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

गुजरात के खेडा जिला में कठलाल नामका एक गाँव है। इस गाँव में ब्राह्मण महिला भक्त रहती है। इस गाँव में एक मात्र यही महिला भक्त थी। भगवान स्वामिनारायण में अटूट निश्चय था। एक दिन वे कूंए में से पानी खींच रही थी, वही से कुछ दर पर महाराज अपने संतो के साथ जा रहे थे। यह जानकर रामबाई घबड़ाकर महाराज के दर्शनार्थ दौड़ पडी। श्रीहरि के पास दौड़कर आ पहुँची, उनका दर्शन करके भाव विभोर हो गयी। महाराज से कहने लगीं कि आप यहाँ तक आये हैं तो घर पदार्पण कीजिये।

महाराजने कहा इसबार रहने दीजिये, बहुत जरुरी वड़ताल पहुँचना है। रामबाई भावुक होकर कहने लगी कि हे महाराज ! मैं आजतक एक निष्ठा से आप की भक्ति करती हूँ। यदि आप अभी जाने को मनाकर रहे है तो मेरे इस घड़े में आप अपना अंगूठा डुबा दीजिये। फिर यह प्रसादी का पानी गाँव के कूंए में डाल दूंगी। वहाँ गाँव का कूंआ भी प्रसादी का हो जायेगा।

महाराजने पूछा कि इससे फायदा क्या होगा ? तब रामबाईने कहा कि इस गाँव में सभी कुसंगी है, आपके चरणोदक लेने मात्र से सभी सत्संगी हो जायेंगे।

श्रीहरिने कहा कि - तुम्हें कैसे पता कि सभी सत्संगी हो जायेंगे ?

रामबाईने कहा कि प्रभु ! आपका स्पर्श हो, आपकी दृष्टि पडे, आपका प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंधजिसके साथ होता है वह सत्संगी हो जाता है। तो गांव के लोग आपके चरणोदक वाले जल को पीकर क्यों न सत्संगी हो। श्रीहरि उनकी इस समझदारी की खूब प्रसंशा किये। रास्ते में श्रीहरिने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि - स्वामी ? रामबाई को अकेले सत्संग में अच्छा नहीं लगता, वे चाहती हैं कि सारा गाँव सत्संगी हो जाय। जो स्वयं से संतुष्ट हो जाता है उसकी अपेक्षा जो दूसरो को भी संतुष्ट करता है वह उत्तम है। इसी को परोपकार कहते हैं। गाँव के लोग प्रसादी का जल पीकर सत्संगी हो जायेंगे ऐसा संकल्प कितना उच्च कोटिका है। गाँव के जिस भाग में यह कूंआ है वहाँ के सभी लोगो में आज भी सत्संग वैसा ही है। यह कितना अद्‌भुत प्रताप है। ऐसे थे महाराज के भक्त।

महाराज के सन्सर्ग वाली वस्तुओं की उतनी ही महिमा सभी समझते थे। महाराजश्री सभी के मनोरथ को पूर्ण करने में लगे रहते थे।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

सत्संग समाचार

वीजापुर में वजीबा की स्मृति में पुनम को चलती हुई अखंड सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संतोकी प्रेरणा से तीर्थ भूमि विजापुर में बजीबाकी स्मृतिमें प्रति पूनम को सभा का आयोजन किया जाता है।

ता. ४-५-१५ पूर्णिमा को नूतन भव्य मंदिर में सुंदर सत्संग सभा में वीजापुर, सांकापुर, भीमपुरा, रणछोडपुरा, भाणपुरा, धनपुरा, गणेशपुरा, हीरापुरा, जेपुर, हाथीपुरा, खगुसी, पिलवाई, वेडा, माणेकपुरा, बेदपुरा, ईश्वरपुरा, इत्यादि गाँवो से हरिभक्त पदयात्रा करते हुये पधारे । सत्संग सभा में संत कथा का लाभ दिये थे । इस सभा में कुंजविहारी स्वामीने सुदंर कथा की थी । अन्त में सभी प्रसाद लेकर विसर्जित हुए थे। (स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर द्विशताब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमदावाद श्री नरनरायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण महादेवनगर का द्विशताब्दी महोत्सव पू. देव स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. १५-५-१५ से २०-५-१५ तक सम्पन्न किया गया था । इस महोत्सव में यहाँ के सत्संगियोंने तन, मन, धन के सहयोग से उत्सव को अच्छी तरह मनाया।

इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाह्न रात्रिपारायण स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर हुई थी । इसके साथ हनुमानजी, श्री गणेशजी की प्राण प्रतिष्ठा भी की गयी थी । इस अवसर पर मारुति यज्ञ, १२ घन्टे की धुन, इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे । कथा की पूर्णाहुति पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदाजी के वरद् हाथों सम्पन्न हुई थी।

ता. २०-५-१५ पूर्णाहुति के समय प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे तथा अन्नकूट की आरती, हनुमानजी, गणेशजी की पुनः प्रतिष्ठा की आरती उतारे थे। बाद में सभा में विराजमान होकर भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर श्री नरनारायण देव युपक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुपी थी । आयोजन तथा संचालन शा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

(को. श्री महादेवनगर)

वडनगर श्री घनश्याम महाराज का ५४ वां वार्षिक पाटोत्सव

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का ५४ वार्षिक पाटोत्सव .पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थित में ता. ३१-५-१५ को प.भ. भावसार किरीटभाई अमृतलाल (वडनगर वर्तमान में मुंबई) परिवार के यजमान पद पर संपन्न हुआ था । इस प्रसंग पर अमदावाद मंदिर के महंत स्वा. शा. हरिकृष्णदासजी तथा वडनगर के महंत शास्त्री स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा को. विश्वप्रकाशदासजी, सिद्धपुर के महंत चंद्रप्रकाशदासजी, माणसा के महंत स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, कोठारी नारायणमुनिदासजी, इत्यादि महंत संतोंने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । पुजारी स्वा. धर्मकिशोरदासजी गुरु शा. नारायणवल्लभदासजी को प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रसादी का हार पहनाया था।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी सभाजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । स.गु. महंत नारायणवल्लभदासजी ने सभा संचालन किया था। (नवीनचंद्र एम. मोदी - वडनगर)

आभर (बनासकांठा) गांव में एकादशी - सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के भाभर गाँव में ज्येष्ठ कृष्ण-११ १२-५-१५ को रात्रि के समय जलाराम मंदिर में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर अमदावाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के को. नारायणमुनिदासजी, स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजी, कुंजविहारीदासजी इत्यादि संतोने धर्मकुल की महिमा समझायी थी । हरिभक्तों की विशाल संख्या सभा में उपस्थित थी । अ.नि. प.भ. नरभेरामभाई, मोतीरामभाई कानाबार को भावभीनी श्रध्धांजलि दी गयी थी।

श्री नरनारायण स्वामिनारायण सत्संग भाभर मंडल द्वारा प्रत्येक एकादशी को सत्संग सभा होती है । जिस में बहुत सारे हरिभक्त भाग लेते हैं। (रमेशभाई एन. कानाबार)

कालीयाणा में अन्नपूर्णेश्वर महादेव प्रतिष्ठा

श्रीजी महाराज सत्संग विचरण करते हुये कुंडल, कड़ी ,दामपुरा, भंकोडा, कालीयाणा इन स्थानो पर सभी को दर्शन देते हुये इन स्थानों को तीर्थभूमि बना दिये हैं । उसी समय के अन्नपूर्णेश्वर महादेव का मंदिर जीर्ण हो गया था - हरिभक्तों के सहयोग से नूतन मंदिर का निर्माण होने पर प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य हाथों से प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी । सभा में प.भ. डाह्याभाई भूटिया, प.भ. भीखाभाई भूटिया कोठारीने प.पू. बड़े महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (अरजणभाई गो. मोरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा मे ज्येष्ठ शुक्ल-१० को श्रीहरि के

अन्तर्धान तिथि के निमित्त यहाँ के महंत शा. सिद्धेश्वरदासजी के मार्गदर्शन में माधव प्रियदासजीने सभी को कथाका लाभ दिया था। (श्री न.ना.यु. मंडल, माणसा)

बोर गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १६-६-१५ को बोर गाँव में शा. माधवप्रियदास (माणसा) ने कथा का लाभ दिया था। युवक मंडल ने धुन-भजन-कीर्तन करके सभी को प्रसन्न किया था। (युवक मंडल - बोर)

हर्षद कोलोनी मंदिर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी में ज्येष्ठ शुक्ल-१० को श्री स्वामिनारायण भगवान के अंन्तर्ध्यान के निमित्त बहनो ने प्रातः ७-०० बजे से सायंकाल ७-०० बजे तक अखंड महामंत्र का धुन किया था। एप्रोच मंदिर में २ घन्टे की धुन कीर्तन किया गया था। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जरवला पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से पू. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से जरवला में नूतन हरिमंदिर निर्माण कार्य पूर्ण होने पर ता. १५-५-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों मूर्ति प्रतिष्ठा की गई थी। इस प्रसंग पर शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी (जयपुर-महंत)ने श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा का रसपान कराया था। गाँव के सभी हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे। यहाँ पर सभी व्यवस्था जेतलपुर के महंत स्वामी के.पी. स्वामीने किया था। वी.पी. स्वामी, श्याम स्वामी, भक्ति स्वामी इस व्यवस्था में लगे रहे।

(बुटीया डाह्याभाई कालीयाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में ता. १४-६-१५ को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। यहाँ के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी तथा स्वा. कृष्णप्रकाशदासजी भगवान का गुणानुवाद किया था। प.भ. पटेल रामाभाई (प्रेमपुरा) की तरफ से भोजन की व्यवस्था की गई थी।

(आर. वी. पटेल, हिंमतनगर)

पाटण में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण में दि. १२-६-२०१५ को एकादशी के अवसर पर सुंदर सभा की गई थी।

इस अवसर पर हिंमतनगर मंदिर के महंत शा. प्रेमप्रकाशदासजी और संत मंडलने एकादशी की महिमा, श्रीजी महाराज की महिमा और धर्मकुल की समझाई थी।

(प्रकाशभाई सोनी - पाटण)

सोलैया (ता. माणसा, जी. गांधीनगर) मंदिर के लिए जमीन संपादित हुई

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की प्रेरणा से पिछले तीन वर्षो से सोलैया गाँव में सांख्ययोगी बहनो द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। जिस वजह से सत्संग में वृद्धि होने से समग्र गाँव के भक्तों ने मंदिर बनाने का अनुरोधकिया। परिणाम स्वरुप मंदिर के लिए भूमि संपादन करने में स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) के मार्गदर्शन में सहयोग देने वाले प.भ. चौधरी पोपटभाई, पीथुभाई, गोविंदभाई, नागजीभाई, मफाभाई, प्रहलादभाई..... आदि तथा बालवा मंदिर के कोठारी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। जल्द ही यहाँ नए मंदिर का निर्माण होगा। (सत्संग समाज - सोलैया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से धर्मकुल की प्रशन्नता से, यहाँ के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से एवं स.गु. शा.स्वामी घनश्यामजीवनदासजी (लालोडा) के नेतृत्व के इडर मंदिर में प्रतिष्ठित गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव ता. ३०-५-२०१५ को मनाया गया। संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक हुआ था पश्चात प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आरती उतारी थी।

प्रासंगिक सभा में अहमदावाद, इडर, लालोडा, टोरडा, वडनगर, सापावाडा, हिंमतनगर, पेथापुर, माणसा, साकली से संत पधारे थे। स.गु. शा.स्वा. रघुवीरचरणदासजी, शा.स्वा. हरिजीवनदासजी, शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदास, स.गु. शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजीने प्रासंगिक उद्बोधन किया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिए थे। कोठारी एस.एस. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था। पाटोत्सव में यजमान प.भ. रेवाभाई जेठाभाई तथा प.भ. नरेशभाई रेवाभाई और प.भ. कमलेशभाई रेवाभाई पटेल आदि परिवारने महाराजश्री का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। सभा संचालन कुंजविहारीदासने किया था। (पूजारी अजयप्रकाशदासजी - पूजारी संतमुनिदासजी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में मूली के गाँवो में अखंड धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी के शुभ संकल्प से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में १२५ गाँवो में १२ घंटे की अखंड धून का आयोजन किया गया था।

जिस में प्रमुख गाँव चूडा, हलवद, घाटीला, खाखरेची, भराडा और खाखरिया देशके धरमपुर, मेडा, कल्याणपुरा आदि में बारह घंटे की अखंड धून तथा सत्संग सभा का

आयोजन किया गया था । जिस में कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदास, शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, पूजारी नित्यप्रकाशदासजी, पार्षद रवि भगत आदि संत मंडलने भगवान संबंधित कथा वार्ता कर भक्तो को धन्य किया था।

सर्वोपरि धाम छपैया और अयोध्या मंदिर में अखंड धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा व धर्मकुल के आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर मंदि के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में सर्वावतारी सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के प्राकट्यभूमि छपैया और अयोध्या मंदिर में १२ घंटे का अखंड धून का आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खास उपस्थित रहे थे । तथा यहाँ के महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी, अयोध्या के महंत देव स्वामी, कोठारी कृष्णवल्लभदासजी तथा संत हरिभक्तोने श्रीहरि की जन्मभूमि पर अखंड महामंत्र धून की थी।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा में पू.अ.सौ. बड़े बहनजी के अक्षरवास पर महामंत्र धून

यहाँ के मंदिर में पू. महंत स्वामी और संतो की प्रेरणा से प.पू. बड़े महाराजश्री की बहन के अक्षरवास के अवसर पर ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून कर श्रद्धांजलि अर्पण की थी।

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्येष्ठ शुक्ल-१० को श्रीहरि अंतर्धान तिथि पर अखंड धून की गई थी। प.पू. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४३ वें जन्म दिवस पर घनश्यामनगर तथा भक्तिनगर में पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजी और संत मंडल ने कथावार्ता कर हरिभक्तो को सुंदर लाभ दिया था। (श्री न.ना.देव युवक मंडल, चराडवा)

विदेश सत्संग समाचार

श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ (ओस्ट्रेलिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ ओस्ट्रेलिया में श्रीमद् भागवत पंचान्ह का आयोजन ३-६-२०१५ से दि. ७-६-२०१५ तक खूब उत्साह से मनाया गया था । महोत्सव के यजमान प.भ. श्री रवजीभाई गागंजीभाई हालाई परिवार (गाँव कुंदनपुर), प.भ. श्री धनजीभाई नानाणी हालाई परिवार (गाँव मेघपर), प.भ. चंद्रकान्त धनजी पिंडोरीया परिवार (माधापर), प.भ. जगदीश रवजी जेसाणी परिवार (गाँव बलदिया) के आदि हरिभक्तोने पितृ के मोक्षार्थ लक्ष्मी का धर्म कार्य में उपयोग किया और भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया था। पारायण के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने चार दिन तक भक्तो का दर्शन-पूजन का लाभ दिया था । अमदावाद स्वामिनारायण मंदिर से पू. शा.पी.पी. स्वामी तथा पू. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा पू. शा.स्वा. बालस्वरुपदासजी तथा पू. शा.स्वा. गोपालजीवनदासजी पधारे थे। पारायणके वक्ता पद पर शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने कथामृत का पान करवाकर भक्तो को धन्य किया था। दि. २-६-२०१५ को मंगलवार को खूब भव्य पोथीयात्रा का आयोजन हुआ था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत समारोह शनिवार दि. ६-६-२०१५ को धामधूम से किया गया था। श्री कृष्ण जन्म बाल लीला चरित्र शिवपार्वती कथा दक्ष यज्ञ को बहुत ही सरल व मधुर रुप से सुनाया था। इस अवसर पर भक्तो के साथ-सहकार से सजावट-प्रसाद भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई थी। (मंत्रीश्री जयेन्द्रभाई सोनी)

नेपाल भूकंप ग्रस्थो के लिए आई.एस.एस.ओ. 'सेवा' संस्था द्वारा सहायता

श्री नरनारायणदेव संस्थापित अपने इन्टरनेशनल श्री स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाईशेझन (आई.एस.एस.ओ.) की 'सेवा' संस्था के मुखिया अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के नेतृत्व एवं आज्ञा से 'सेवा' संस्था देश विदेश में कुदरती संकट के वक्त त्वरित सेना कर इंसानियत का उत्तम उदाहरण देते है।

अभी नेपाल में आये भूकंप में हजारो लोग मारे, कई बेघर हुए और बहोतो ने परिवार खोया । ऐसे समय में महाराजश्री ने विदेश में रहने वाले सभी हरिभक्तो से अपील की गई जिसके फलस्वरुप २५,००० डोलर एकत्र हुए।

भूकंपग्रस्त विस्तार में तुरंत राहत सामग्री नेपाल स्वास्थ मंत्रालय की सहायता से त्वरितरुप से वितरीत की गई।

अंदाजन ७५ से १०० टन जितनी मेडीकल वस्तुएं एम-डी कार्गोपमेन, फ्रेडेक्स केद्वारा मुफ्त में पहुंचाई गई। इन प्लेन की सहायता से सारा सामन तुरंत नेपाल पहुंचाया गया। उनके पास ६० जितने लेक्सटर-IV फ्लुडस थे. दवाएं तथा अन्य आवश्यकता वाली चीजों के ८० पेलेट्स भेजे गए।

अपनी संस्था एक आंतरराष्ट्रीय एन.जी.ओ. है। इसके मुखिया अपने महाराजश्री है। यह स्वास्थ एवं बीमार लोगो की सहयता में सदैव तत्पर रहने वाली संस्था है। पीडीत लोगो की सहायता करना अपना मुख्य धर्म एवं मकशद है।

अपने सेवाभावी भक्तो के कारण संस्थाने खूब विकास किया है। और सदैव जरुरतमंदो के साथ है, और मुसिबत में आवश्यक सभी संसाधन की आपूर्ति करते हैं।

अपनी इस संस्था की स्थापना इ.स. १९७८ में प.पू.ध.धु. आचार्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजने की थी। आज भारत के बहार इसके ५० से अधिक केन्द्र है और अमेरिका में २५ से अधिक चेप्टर सक्रिय है।

आई.एस.एस.ओ. न्युजर्सी, मेसेच्युसट, फ्लोरिडा, ओहायो, मीशीगन, इली नोरुस, ज्योर्जीया, केलिफोर्निया और टेकसास मे चेप्टर्स है।

और जानकारी के लिए संपर्क

डॉ. जिज्ञेश साह : **732-423-0151**

या **jshahma@gmail.com** या

www.issoseva.org OR www.issous.org

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

यहाँ के मंदिर में अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से योगीनी एकादशी के अवसर पर महंत शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी और हरिभक्तो के साथ धून-भजन कीर्तन किया गया था । स्वामीजीने एकादशी का महात्म्य बताया था। सेवा करने वाले भक्तो का फूलहार से सम्मान किया था । प.पू. बड़े महाराजश्रीने बड़ी बहन के अक्षरवास पर धून की गई थी। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन २८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन-न्युजर्सी १६ मई शनिवार को प्रातः ९-०० बजे से ३-०० बजे तक पूज्य महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) स.गु. शा.स्वामी भक्तिनंदनदासजी, स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी, स्वा. नरनारायणदासजी, श्रीजी स्वामी, सत्संगभूषणदासजी, ब्रह्म स्वामी, शा. धर्मकिशोर स्वामी, इत्यादि संत मंडल की शुभ उपस्थिति में २८ वाँ पाटोत्सव भव्यता से मनाया गया था । प्रातः ९-०० बजे ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । अभिषेक शा.स्वा. आत्मप्रकाशासजी ने किया था । सभा में धून भजन की गयी थी । हरिभक्तों ने सभा में सन्तो का पूजन-अर्चन किया था । अन्य महानुभावों का स्वागत भी किया गया था । प्रेसीडेन्ट भक्तिभाई, पंकजभाई तथा अन्य सदस्य भी उपस्थित थे । यजमानो का भी सन्मान किया गया था । २-०० बजे भव्य अन्नकूट के दर्शन का लाभ सभी को मिला था । यहाँ पर भारत से पधारे हुए पू. आत्मप्रकासदासजी स्वामी तथा संत मंडल सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। (प्रवीण शाह)

अमेरिका में पारसीपके छपैया धाममें मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

सर्व प्रथम प.पू. बड़े महाराजश्री अमेरिका की धरती पर मंदिरो का निर्माण हो इस हेतु से इन्टर नेशनल स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाईझेशन नाम की संस्था का स्थापना किये । इसके बाद विदेशो में अमेरिका, न्युजीलेन्ड, ओस्ट्रेलिया, युरोप,

प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल को मेडिकलका ईनोनेटर तथा फीलान्प्रोपिस्ट इन्डियन होल आक फेम एवोर्ड

ओकलेन्ड न्युजीलेन्ड के मनाकुजीपी विजिनेसमेन वहाँ के प्रतिष्ठित समुदाय के अग्रणी प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल को इन्डियन होल आफ फेम में समाविष्ट किया गया है । ओकलेन्ड के एक प्रसिद्धि होटल में विगत सप्ताह में आयोजित एवोर्ड समारंभ में न्युजीलेन्ड के प्रधान मंत्री श्री जहोन के द्वारा डॉ. कान्तिभाई पटेल को ''होल आफ फेम'' में समाविष्ट करके उनका सन्मान किया था ।

इ.स. १९७७ के समय से ओटारा सीटी में मेडीकल प्रेक्टिश करने वाले डॉ. कांतिभाई हाल निर्वाण हेल्थ ग्रुप के स्थापक तथा डाइरेक्टर हैं । जो ग्रुप आज न्युजीलेन्ड में जनरल प्रेक्टिश करनेवाला सबसे बड़ा नेटवर्क है । रोयल न्युजीलेन्ड कोलेज आफ जनरल प्रेक्टिसनर्स के संमानित सदस्य बोन्का (वर्ल्ड ओर्गेनाइजेशन ओफ नेशनल कोलेजीस, एकेडमीस तथा एकेडेमीक एसोशिएशन आफ फेमीली झीजी सयन्स) के सदस्य भारतीय समुदाय तथा सेवा करने से कविन्स सर्विस मेडल प्राप्त करने वाले डॉ. साहब न्युजीलेन्ड के सर्व प्रथम मेईन स्ट्रीम प्राइमरी हेल्थ ओर्गेनाईजेशन टोटल हेल्थ केर चेरीटेबल ट्रस्ट के स्थापक ट्रस्टी हैं ।

उन्हें इस्ट तमारी हेल्थ केरको भी बिजनेश इनोवेशन तथा स्टूटेजी क्षेत्र में एवोर्ड इक्वल एम्पोयमेन्ट ओसर्च्युनीटीस ट्रस्ट द्वारा भी मान्यता मिली हुई है ।

जिन्हे यहाँ के भारतीय मंदिर के स्थापक ट्रस्टी ओकलेन्ड मंदिर के निर्माता तथा आई.एस.एस.ओ. के प्रेसीडेन्ट हैं । इन्होंने पापाटोटो में भी हिन्दु मंदिर बनाया है । सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री नरनारायणदेव गादी के इतने निष्ठावान का जब सन्मान हो रहा था । उस समय वे बड़े विनम्र दिखाई दे रहे थे ।

उपरोक्त सन्मान के विषय में उनके रोगी, साथी डोक्टर, तथा उनकी पत्नी डॉ. रंजनाबहन इस एवोर्ड के लिये सबसे अधिक योग्य बताया । वे इस देश के लिये तथा रोगियों के लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं ।

यह एवोर्ड देश के विकाश में जो सहयोग किया हो उसे दिया जाता है । अपने देश के व्यक्ति के लिये ऐसा सन्मान श्रेष्ठ कहा जा सकता है । ऐसा सन्मान विदेश की धरती पर डॉक्टर के व्यवसाय के उच्चपद पर रहकर ऐसा भव्य एवोर्ड प्राप्त करने वाले अपने ही सत्संग में से प.भ. डॉ. कांतिभाई की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं ।

केनेडा में मंदिरों का निर्माण हुआ । इससे सत्संग में खूब वृद्धि हुई, यह देखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भी देश-विदेश में सतत विचरण करते रहते है । अनेक मंदिरों का निर्माण किये । अमेरिका में प्रति वर्ष २-३ मंदिरो का निर्माण हो रहा है । प.पू. आचार्य महाराजश्री सतत सत्संग प्रचार में व्यस्त रहते हैं ।

१७ से २४ मई २-१५ के दौरान अमेरिका के न्युजर्सी के पारासपनी में भव्य मंदिर का निर्माण पूर्ण होते मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया था ।

इस अवसर पर भागवत कथा का सुंदर आयोजन किया गया था । प्रथम दिवस पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, पू. बिन्दुराजा (पू. बहनजी), श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार के अन्य चेप्टर से संत-हरिभक्त पधारे थे. वक्ता के रुप में श्री योगेन्द्रभाई भट्ट थे । यजमान परिवार की उपस्थिति में पोथीयात्रा निकाली गई थी । जिसे मुख्य होल के सुवर्ण व चाँदी के भव्य सिंहासन समक्ष व्यासपीठ पर रखा गया । आरती में यजमान के साथ हरिभक्त भी जुडे थे । रोज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में और संतो की उपस्थिति में हजारो हरिभक्तोने कथा श्रवण का लाभ लिया था । त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग में महाराजश्री के साथ यजमानो ने भी लाभ लिया था । सामूहिक महापूजा में प.पू. आचार्य महाराजश्री उपस्थिति में भक्तों ने लाभ लिया था ।

दि. २४ मई २०१५ को रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करमकलों से षोडशोपचार अभिषेक के साथ सभी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ण की गई थी । इस अवसर पर हजारो भक्त उपस्थित रहे थे ।

इस अवसर पर सुंदर रास-गरबा का आयोजन किया गया था । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो से मेयर, काउन्सीलर, महानुभाव तथा यजमान परिवार का सन्मान किया गया था । नूतन प्रकाशन पुस्तक तथा सीडी का विमोचन भी प.पू. महाराजश्री के करमकलो से किया गया था ।

सभी हरिभक्तोने प.पू. आचार्य महाराजश्री के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किए थे पश्चात अन्नकूट दर्शन एवं प्रसाद ग्रहण किया था । (प्रविण शाह)

समस्त सत्संग के लिये

समस्त सत्संग को सहर्ष विज्ञापित किया जाता है कि साधु सद्गुणदासजी गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी, साधु धर्मसुतप्रियदासजी गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी तथा साधु परोपकारदासजी गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी तीनो संत श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश के नागरिक संत थे । अब वे अहमदावाद श्री नरनारायणदेव देश में रहने के लिये आ गये हैं अतः अब वे श्री नरनारायणदेव देश के नागरिक हो गये हैं । यह सभी सत्संगियों को ज्ञान के लिये है ।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

प.अ.सौ. बडीबहनजी का अक्षरनिवास - प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की बड़ी बहनजी तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की बूआजी पूज्या अ.सौ. राजेन्द्रकुमारी रत्नाकर मिश्रा (पू. बड़ी बहन) सं. २०७१ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ९/१० गुरुवार ता. ११-६-१५ को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

गोझारिया (मेउवाला) : प.भ. घनश्यामभाई रसिकलाल भावसार श्री न.ना.यु. मंडल के संचालक ता. ४-६-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं ।

आभर (बनासकांठा) : प.भ. रमेशभाई कानाबार के पिताजी प.भ. नरभेरामभाई मोतीरामभाई (देवकापडीवाला) ता. ९-२-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं ।

कलोल (मोरवासण-निवासी) : प.भ. प्रवीणभाई शंकरभाई पटेल ४२ सोल समाज के कलोल पंचवटी मंदिर के सक्रिय सेवाभावी कार्य कर्ता जो जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी के दर्शनार्थे जाते समय श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

१

२

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर पर्थ – ओस्ट्रेलिया श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा पारायण के वक्ता पद पर स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा. गोपालजीवनदासजी। (२) भाभर गाँव में एकादशी की भव्य सभा में सत्संग कराते हुए को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी।

फलहारी आंटा – श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में से लेने का आग्रह रखें।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

१

२

(१) आई.एस.एस.ओ. अमेरिका सेवा संस्था द्वारा नेपाल भूकंप ग्रस्तो के लिये २५,०००/- डोलर का चेक की सहायता की गई है।

(२) अपने डॉ. कांतिभाई पटेल को मेडिकल का "होल ओफ फेम" एवोर्ड अर्पण करते हुए न्युजीलेन्ड के प्रधानमंत्री श्री जहोन के।

गुरुपूर्णिमा

द्वितीय आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा ता. ३१-७-१५ शुक्रवार

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का - संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन अर्चन

प्रातः ८-३० बजे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अमदावाद

प.पू. बड़े महाराजश्री का संत-हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन-अर्चन

प्रातः ८-३० बजे श्री स्वामिनारायण, मूली

प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

दूसरे आषाढ कृष्ण-१० ता. ९-८-१५ रविवार प्रातः ८-३० बजे

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद

Praful Kharsani